और अयोध्या का ढांचा यहां के बहुत से लोगों को अपना लगता है, और उसको विरोध करने वाले लोग संकुचित माने जाते हैं। अरे, उसे आक्रांता ने यहां पर बनाया। उस आक्रांता की बनायी हुई चीजों को शीघ्रता से दूर करना चाहिए कि बनाये रखना चाहिए? देश की अस्मिता का भाव, राष्ट्रीयता का भाव, हम एक है यह भाव कैसे जागृत होगा? और इसलिए अपने और पराये लोगों का विवेक इस देश में दुर्भाग्य से नहीं रहा। अपने देश में राम मन्दिरों की कोई कमी नहीं है। और इसलिए एक और राम मन्दिर बनाकर हम राम मन्दिरों की संख्या में बढ़ोत्तरी करना नहीं चाहते। फिर राम मन्दिर का आग्रह क्यों? क्योंकि जब समाज के सामने, देश के सामने अपना और पराया इसका विवेक जब समाप्त हो जाता है, और जब लोग आक्रांताओं को भी अपना मानने लगते हैं और इसके कारण कई समस्याएं पैदा हो जाती हैं, तब राष्ट्रीयता का भाव जागृत करना अनिवार्य हो जाता है।

लोग कहते हैं कि किसी दल को सत्ता प्राप्त होने के लिए राम मन्दिर का मुद्दा उठाया जाता है। नहीं, राम मन्दिर इस देश की करोड़ों जनता के हृदय की राष्ट्रीयता का प्रतीक है। इसका विवेक, इसका विचार स्थापित करना पड़ेगा। और इसलिए इसका विरोध करने वाले राजनैतिक दृष्टि से सोचते हैं। उनके मन और दिमाग में राजनैतिक राष्ट्रवाद है। मतों की गिनती के आधार पर विचार किया जाता है। और जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को मानते हैं। वह किसी को अच्छा लगे या गलत लगे, पर जो सही है, जो उचित है, उसी को रखने का प्रयास करते हैं। इन बातों को समझने की आवश्यकता है। हमने अंग्रेजी को अपनी भाषा मान लिया। हमने कहा न, कि अपना पराया समझ में नहीं आता। हम किसी भी भाषा के विरोधी नहीं है। होना भी नहीं चाहिए। विविध प्रकार की भाषाएं हम सीखें। परन्तु हम अगर एक विचार करें कि अगर भारत को समझना है तो क्या भारत को विदेशी भाषाओं के माध्यम से समझ सकेंगे। अपने प्राचीन गौरव का एक विश्वास मन में जगाते हुए उस राष्ट्रभाव को अगर पुष्ट करना है तो यहां की भाषाओं में लिखे हुए ग्रन्थों को समझना ही पड़ेगा। तो हिन्दी का आग्रह, संस्कृत का आग्रह ये साम्प्रदायिक कैसे हो जाता है? राष्ट्रवाद को एक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बलवान करने वाला, पुष्ट करने वाला ये विचार है कि यहां का अध्ययन, यहां की भाषाओं में होना चाहिए। मैं एक बार फिर कहना चाहूंगा कि हम अंग्रेजी के